REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

वर्तमान परिदृश्य में श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व सम्बन्धी विचारों की प्रासंगिकता

Dr. Sarita Sharma[1] and Raveesh Kumar[2]
[1]Reader in CTE, Ex-Head, Department of Education,
Ex-Dean Edu. IASE Deemed University, Sardarshahar, Churu (Rajasthan)
[2]Research Scholar , (Ph.D. Education) IASE Deemed University,
Sardarshahar, Churu (Raj.)

शोध सारांश

जीवन विज्ञान, जीवन विद्या एवं जीवन जीने की कला के विशेषज्ञों (भारतीय संस्कृति के प्राचीन ऋषियों से लेकर आज के विचारकों तक) का यह मत है कि समग्र मानव विकास के लिए जरूरी है कि जीवन की सभी विभूतियों और उसके सभी अंगों का संतुलित उपयोग किया जाये। जीवन को एकांगी न रहने दिया जाये, उसे सर्वांगीण बनाया जाये। वर्तमान समय में ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीकों के असाधारण विकास के बावजूद मनुष्य जिन समस्याओं-विडम्बनाओं से घिरा है; स्वस्थ, सुखी, संतुष्ट एवं शांतिमय जीवन की कामना करते हुए भी रोगों कष्टों, तनाव, अवसाद, अशांति आदि से त्रस्त है, उसका कारण मानव जीवन के एकांगीपन को ही माना जाता है। श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार मानव के समग्र विकास और जीवन को सही ढंग से जीने के लिए उसके कम से कम तीन आयामों (१. काया, २. विचार तथा ३. चेतना) को समझना तथा उनका परस्पर संतुलन बनाना जरूरी है। समग्र मानव विकास के लिए भारतीय संस्कृति तो आदि काल से ही तीनों पक्षों के संतुलन की पक्षधर रही है। पश्चिमी संस्कृति का विकास चूँकि पदार्थ विज्ञान के सहारे ही हुआ, इसलिए प्रारंभ में उसकी सोच एकांगी था। पहले व्यक्तित्व (Personality) को केवल शारीरिक परिवेश तक ही माना जाता रहा। फिर उसमें संशोधन हुआ 'Healthy Mind in Healthy Body' (स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मानस)। कुछ ही समय में अगला संशोधन करना पड़ा - 'Healthy Mind in Healthy Body with Healthy Sprit' स्वस्थ शरीर में स्वस्थ भावना के साथ स्वस्थ मानस । इसी प्रकार विश्वस्वास्थ्य संगठन (WHO) ने सकारात्मक स्वास्थ्य (Positive Health) की परिभाषा में संशोधन किया। वर्तमान परिभाषा है - 'It is Physical, Mental, Social and Spiritual Well Being' अर्थात् - शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ होना।

आजकल पर्सनालिटी डवलपमेंट कांसेप्ट को समाज के सभी क्षेत्रों में बहुत मान्यता प्राप्त है। आदर्श प्रबंधनों (आइडियल मैनेजमैण्ट) के सूत्रों पर शोध करते-करते विश्व के मूर्धन्यों को भी यह तथ्य स्वीकार करना पड़ा है कि आदर्श प्रबंधन के लिए व्यक्तित्व में आध्यात्मिक मूल्यों (स्पिरिचुअल वैल्यूज़) को शामिल करना अनिवार्य है, लाजिमी है। पं० श्रीराम शर्मा आचार्य ने इस संबंध में बहुत स्पष्ट रूप से लिखा और कहा है। सामान्य रूप से हमारे पास शक्ति की तीन मुख्य धाराएँ हैं – भौतिक शक्ति,

धन शक्ति तथा विचार शक्ति। इन शक्तियों को यदि भटकने से, गलत रास्ते पर जाने से रोकना हो, तो इन पर चेतना की शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति का नियंत्रण होना ही चाहिए तभी मानवी व्यक्तित्व का संतुलन स्थापित किया जा सकता है। उसके अभाव में भौतिक शक्ति उद्दण्डता की ओर, धन शक्ति, व्यसनों की ओर तथा बौद्धिक शक्ति कुचक्रों- घोटालों की ओर बहक जाती है। इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना को आज खुली आँखों से विभिन्न क्षेत्रों में घटित होते देखा जा सकता है। जिन शक्तियों को मनुष्य ने मनुष्यता की प्रगति, सुख, संतोष, शान्ति, प्रेम, भाईचारे की कामना से विकसित किया था, वही शक्तियाँ ध्वंस, पतन, पीड़ा, असंतोष एवं वर्ग-विग्रह पैदा करने के माध्यम बन गई हैं।

की वर्ड्स:- व्यक्तित्व, विकास, अनैतिकता, स्वास्थ्य, संस्कृति, श्रीराम शर्मा आचार्य।

शोध पत्र

भारत सांस्कृतिक, सामाजिक, पुरातन संस्कृति का देश है। भारत भूमि देवताओं की पुण्यभूमि है हमारे देश की विरासत में हमें नैतिकता एवं सामाजिक मूल्यों का इतिहास मिला है। संपूर्ण विश्व में भारत की पहचान का प्रतीक नैतिकता है। भारत की अपनी विशेषताएँ जीवन के तमाम क्षेत्रों में रही हैं। अध्यात्म की गंभीरता और व्यवहारिकता का सुन्दर समन्वय भारत के प्रत्येक कार्यक्षेत्र में दिखाई देता रहा है। व्यक्तित्वों के संदर्भ में भी यही है। अन्य देशों में युवकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों में शारीरिक बल और लौकिक दक्षताप्रधान कार्य ही बहुधा देखे जाते हैं, किन्तु भारत की बात ही और है। यहाँ के युवक-युवतियों के व्यक्तित्वों में भौतिक-लौकिक के साथ उच्च आध्यात्मिक क्षमताएँ, दक्षताएँ भी मिलती रहीं है। भगवान राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध से लेकर आदि शंकराचार्य, चैतन्य महाप्रभु, ज्ञानेश्वर, विवेकानन्द आदि पुरुष और सीता, शकुन्तला, गार्गी, मैत्रेयी, अरुन्धती, मदालसा, मीरा जैसे महान व्यक्तित्वों के उदाहरण भारतीय परंपरा में कदम-कदम पर मिलते हैं। भारतीय व्यक्तित्वों में शारीरिक बलिष्ठता, युद्धकौशल के साथ-साथ उच्च स्तरीय आध्यात्मिक विशेषताएँ भी पाई जाती हैं। पवनपुत्र हनुमान जितने बड़े मल्ल एवं योद्धा हैं, उतने ही श्रेष्ठ ज्ञानी और भक्त भी हैं। राजकुमार सिद्धार्थ ही बाद में भगवान बुद्ध कहलाए। उन्होंने यशोधरा के स्वयंवर के समय तमाम राजकुमारों से अस्त्र-शस्त्र संचालन का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया था। गुरु गोविन्द सिंह एवं बन्दा वैरागी की वीरता और आध्यात्मिकता के कीर्तिमानों से सभी परिचित हैं।

लेकिन यह कहते हुए बहुत निराशा होती है कि आज की हमारी नई एवं आधुनिक पीढ़ी जिसमें सब भी आते है, इस अमूल्य धरोहर को खोते जा रहे हैं। किसी भी देश का भविष्य उस पीढ़ी के हाथ होता है जो आज शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त भावी उत्तरदायित्वों को सँभालने वाली है।प्रगति और सुव्यवस्था के लिए यह अति आवश्यक है कि भावी जिम्मेदारियों सँभालने वालों के व्यक्तित्वों को नैतिक दृष्टि से उत्कृष्ट बनाया जाय। अन्यथा योजनाएँ कितनी ही उत्तम क्यों न हों, उन्हें चलाने वाले यदि उपयुक्त स्तर के न हुए तो सफलता संदिग्ध रहेगी। नैतिकता का अंकुर बच्चों के हृदय में बचपन से बोया जाता है अर्थात छात्र जीवन में धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर होता है। वीर शिरोमणि शिवाजी की पहली गुरु उनकी मां जीजाबाई थी। गीली मिटटी से मनचाहे आकार के बर्तन बनाए जा सकते हैं,सूखने पर वह ढलती नहीं बल्कि बिखर जाती है। गीली लकड़ी को मोड़ा जा सकता है सूखने पर तो मोड़ना संभव नहीं। बालकपन और किशोरावस्था ऐसी है, जिनमें पूर्वाग्रह और संस्कार परिपक्व नहीं होते हैं। वर्तमान में चहुँओर दृष्टि डालने पर यह दृष्टिगोचर हो रहा है कि बालकों-किशोरों में नैतिकता के स्थान पर अनैतिकता अधिक घर करती जा रही है। उनके मन-मस्तिष्क-हृदय अशिष्टता, अनुशासनहीनता और उच्शृंखलता से ओतप्रोत दिखाई देते है।

बढ़ती अनैतिकता के पीछे - व्यक्तित्व असंतुलन:-

राष्ट्रीय बाल अपराध के आंकड़े देखें तो ये बड़े चौंकाने वाले हैं। देश के विभिन्न शहरों में बाल अपराध की घटनाओं में इजाफा हुआ है। राष्ट्रीय अपराध अभिलेख ब्यूरो से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार अगर 2011 की बात करें तो उस साल 16-18 साल के उम्र के कुल 21,657 अभियुक्तों की गिरफ्तारियां हुईं। 12-16 साल तक कुल 11,019 और 7 साल से 12 साल तक 1,211 गिरफ्तारियां हुईं. 2011 में कुल 33,387 गिरफ्तारियों में 6,122 निरक्षर पाए गए। प्राथमिक स्तर तक शिक्षा प्राप्त अभियुक्तों की संख्या 12,803 रही। वहीं, माध्यमिक स्तर पर फेल हो जाने वालों की संख्या 10,519 और पास होने वालों की संख्या 4,443 है। **एन सी आर बी** के आंकड़ों की मानें तो साल 2003 से 2013 के बीच 10 वर्षों के दौरान करीब 379,283 नाबालिग अपराधियों को गिरफ्तार किया गया। 2013 में 16 से 18 सालके 28,860 बाल अपराधियों को अलग अलग मामलों में पुलिस ने पकड़ा। दिलचस्प तौर पर इनमें लड़कियों का प्रतिशत करीब 4.3 था यानी 1,867 लड़कियां बाल अपराध में गिरफ्तार की गईं। सिर्फ 2013 में समूचे देश में 43,506 किशोर अपराधी गिरफ्तार किए गए। बाल अपराध से जुड़े ये आंकड़े वाकई हैरान करने वाले हैं। उपरोक्त तथ्यों से यह स्पष्ट होता प्रतीत होता है कि वर्तमान में हम नैतिकता के सर्वाधिक ह्रास से गुजर रहे हैं और इसकी जड़ मनुष्य के अनैतिक व्यवहार में है। मनुष्य के व्यवहार का आधार क्या है? इस प्रश्न का उत्तर अमेरिकन सामाजिक मनोवैज्ञानिक **' एरिक फ्रॉम '** अपनी पुस्तक **"साइकोलॉजी एंड ह्यूमन सोसाइटी "** में लिखते हैं कि

"मनुष्य के व्यवहार का आधार उसका आचार है और आचार की अभिव्यक्ति व्यवहार अंतरंग को सँवारे बिना उत्तम व्यवहार की कल्पना करना और सही अर्थों में मानवता का परिचय दे पाना हथेली में सरसों ज़माने की तरह है। वे आगे लिखते हैं कि आज हम कहने को तो अंतरिक्ष युग में प्रवेश कर चुके हैं , और बाहरी दृष्टि से यह मनुष्य की बहुत बड़ी विजय का द्योतक भी है पर जब हम मनुष्य के अंतराल में झाँकते हैं तो ऐसा लगता है कि वह एक बार फिर से पाषाण युग की ओर अग्रसर हो रहा है।वे चेतावनी देते हुए कहते है कि यदि हमारा ध्यान मनुष्य के व्यक्तित्व के परिष्कार की ओर न होकर मात्र बाह्य उपलब्धियों की ओर ही केंद्रित रहा, तो फिर हम आदि मानवों की श्रेणी से भी नीचे पशुओं की श्रेणी में आ जायेंगे जिसका एक ही काम होगा, पारस्परिक विद्रोह और विध्वंस।"

ऐसे ही 'मानवी पतन का एकमात्र कारण जीवनोउद्देश्य को मनुष्य द्वारा भूल जाना' **आर० जूल्स ड्यूबस (अमेरिकन माइक्रोबायोलॉजिस्ट और ह्यूमनिस्ट)** अपनी पुस्तक **" सो ह्यूमन एज एनिमल"** में बताते हैं। इसी बात को दूसरे शब्दों में न्यूयॉर्क में 1977 में छपी पुस्तक' **The biological origin of human values** में उसके लेखक **G.E. Pugh** लिखते हैं कि "मनुष्य की पहचान उसके भावनात्मक संगठन के कारण है।मात्र बुद्धि अथवा आकार से वह मनुष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। यदि ऐसा ही होता,तो प्रयोग-परीक्षणों के दौरान बंदर और चिम्पांजी को भी बुद्धिमान पाया गया है।इस आधार पर तो वे भी मनुष्य की पंक्ति में आ खड़े होंगे, पर वस्तुत: मनुष्य उदात्त भावनाओं का समुच्चय है।" यही भावनाएँ मनुष्य के व्यवहार को संचालित करती है तथा आचरण को जन्म देती हैं। इसी का समर्थन करते हुए नोबल प्राइज विजेता **Sir John Carew Eccles** अपनी पुस्तक **The Human Psyche** में कहते हैं कि "मनुष्य अपने अंत:करण में उत्कृष्टता के बीज सँजोये हुए है। यदि इसे निरंतर पोषण देकर विकसित किया जा सके, तो कोई कारण नहीं की मानव महामानव न बन सके।"

श्रीराम शर्मा आचार्य भी वर्तमान में बढ़ती अनैतिकता के पीछे असंतुलित मानवी व्यक्तित्व को मुख्य कारण मानते हैं। उन्होंने इस सन्दर्भ में कहा है कि "इस समय मनुष्य और मनुष्यता, इन्सान और इन्सानियत अग्नि परीक्षा जैसी स्थिति में से गुजर रहे हैं। पशुता और असुरता के ऐसे भयंकर आक्रमण हो रहे हैं कि मनुष्य के अन्दर भी मनुष्यता का निर्वाह अत्यंत कठिन लग रहा है। कभी शरीर धारी असुरों और देवों में युद्ध हुआ होगा, तब उनमें अंतर करना आसान रहा होगा, किन्तु आज तो

स्थिति बड़ी विचित्र है। असद्वृत्तियाँ हर मनुष्य, हर वर्ग, हर सम्प्रदाय और हर क्षेत्र में फैली हुईं हैं। वे मानवोचित सद्वृत्तियों को कमजोर करती जा रही हैं। बाहर से कोई मारने आए तो उसका मुकाबला करें, पर जब अन्दर के रोग ही हमें मार रहे हों तो लड़ाई के बाहरी हथियार कहाँ काम करेंगे? बाहर से कोई जहर दे तो उसके लिए प्रत्यक्ष व्यवस्था बनाई जा सकती है, किन्तु जब शरीर के अन्दर से ही विष पनप रहा हो, फैल रहा हो, तब बाहरी व्यवस्था बेचारी क्या करे?

ऐसे समय में समस्या के अनुरूप ही उपचार करने पड़ते हैं। सोने में मिली खोट निकालने के लिए उसे आग या तेजाब में डालकर उसके कण-कण से खोट को निकालना, गलाना पड़ता है। शरीर में विष फैला हो तो पूरे शरीर को शोधन प्रक्रिया में से लम्बे समय तक गुजारना होता है। यह प्रक्रियाएँ कष्टकारक भले हों, लेकिन उनका कोई सहज विकल्प नहीं है। ऐसी ही प्रक्रिया इन दिनों चल रही है। मनुष्य और मनुष्यता की रक्षा के लिए व्यक्तित्व शोधन जैसी कठोर प्रक्रियाएँ अनिवार्य हो गई हैं।"

श्रीराम शर्मा आचार्य के व्यक्तित्व परिष्कार संबंधी विचार:-

व्यक्तित्व परिष्कार के माध्यम से ही श्रीराम शर्मा आचार्य मानव जीवन के संतुलन को साधने का मार्ग सुझाते हैं। वर्तमान चहुँओर व्याप्त अनैतिकता के लिए वह व्यक्तित्व के असंतुलन और आत्मबल की कमी को जिम्मेदार ठहराते हैं। **अपनी पत्रिका अखण्ड ज्योति के अप्रैल सन् 1977 के अंक** में आत्मशक्ति के महत्व को अनिवार्य बताते हुए लिखते हैं कि कार्य के अनुरूप आत्मबल, संकल्प बल जाग्रत् करना जरूरी है:-

व्यक्तिगत जीवन की गरिमा उस आत्म-बल पर आधारित है, जिसमें आदर्श और संकल्प का समान रूप से समन्वय होता है। सदुद्देश्य में भाव-भरी श्रद्धा और कर्त्तव्य पालन में प्रचण्ड निष्ठा का समन्वय होने से इस आत्म-शक्ति का उदय होता है। उसी के सहारे लोभ और भय के अवरोधों को हटाते हुए उच्चस्तरीय आदर्शों को पूरा कर सकना सम्भव होता है। समाज सेवा की परमार्थ परायणता से ही कोई व्यक्ति यशस्वी होता है। लोक-सम्मान और जन-सहयोग पाकर लोग ऊँचे उठते और सफल बनते हैं। यशस्वी और जन-नायक बनने की आकांक्षा भी बिना आत्मबल के पूर्ण नहीं हो सकती। परमार्थ प्रवृत्ति गहरी और उच्च स्तरीय होनी चाहिए, तभी उसका चिरस्थाई सत्परिणाम निकलेगा। हथकंडे बाजी से कुछ समय के लिए सस्ती वाह-वाही की लूट-खसोट हो सकती है, पर उतने भर से कोई काम बन नहीं सकता। **धूर्तता के बल पर समेटी गई प्रशंसा में स्थायित्त्व कहाँ होता है? काठ की हाँड़ी में खिचड़ी कहाँ पक पाती है?**

अपने अनुकरणीय आदर्श छोड़ जाने वाले, कुछ महत्त्वपूर्ण कार्य कर गुजरने वाले व्यक्तियों का विश्लेषण किया जाये तो उन सभी में संकल्प बल की विशेषता पाई जायेगी। कहना न होगा कि ओछे, दुष्ट, स्वार्थी, मनोभूमि मे वह संकल्प-शक्ति विकसित हो ही नहीं सकती जिसकी गर्मी से पर्वत गलने और पानी की तरह बहने लगते हैं। यहाँ पर श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने यह स्पष्ट कहा कि व्यक्तित्व परिष्कार मानवी अंतःकरण के परिष्कार से ही सम्भव है बाहरी लीपापोती से काम नहीं चलने वाला। **वे इसी लेख में आगे लिखते हैं -** प्रगति कुटिलता के बल पर नहीं, सदाशयता और सज्जनता की नीति अपनाने से ही सम्भव होती है। सृजन की सामर्थ्य ही वास्तविक शक्ति है। उसी को विकसित करके मनुष्य गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता प्राप्त करता है। व्यक्तित्व को निखारने और सुसंस्कृत बनाने के प्रयत्न ही किसी मनुष्य में समर्थ सशक्तता उत्पन्न करते हैं। उसी से गरिमा बढ़ती है। सृजनात्मक प्रयोजनों में यही क्षमता काम आती है। लोकहित उसी से संभव होता है। सेवा-साधना उसी के सहारे बन पड़ती है। लोक सम्मान से लेकर आत्म-संतोष तक के अनेकानेक वरदान उसी के सहारे उपलब्ध होते हैं। **भविष्य निर्माण का एकमात्र उपाय आत्म-निर्माण ही माना गया है।** संचित कुसंस्कारों से जूझना-उन्हें उखाड़ फेंकना प्रबल पुरुषार्थ कहा जाता है। दूसरों से लड़ने की अपेक्षा अपने से लड़ना-आन्तरिक शत्रुओं को परास्त करना अधिक कठिन है। आत्म-शोधन के मोर्चे पर लड़ना और विजय प्राप्त करना बाह्य जगत की किसी भी सफलता की तुलना में अधिक श्रेयस्कर है। **व्यक्तित्व के परिष्कार**

और देवात्माओं जैसा लोक-व्यवहार ही मानव जीवन की सफलता का एकमात्र आधार है। वह उत्कृष्टता के प्रति असीम श्रद्धा रख सकने पर ही संभव होता है। आये दिन के आँधी-तूफानों से, ज्वार-भाटों से आत्मवादी दृष्टिकोण के दीपक को बुझने न देना, भँवर से नाव खेकर ले जाने की तरह कठिन है। इसे अटूट धैर्य और असीम साहस के सहारे ही सम्पन्न किया जा सकता है। मानवी गरिमा को प्राप्त कर सकने की ललक तो बहुतों को रहती है, पर उसे पा सकने में आत्म-बल सम्पन्न शूर-वीर ही सफल होते हैं। भौतिक जीवन में चिरस्थाई सफलताएँ प्राप्त करने के लिए भी आत्मबल की, संकल्प बल की आवश्यकता पड़ती है। विद्यार्थियों में से अनेकों को अरुचि और आवारागर्दी की आदत मूर्खता और पिछड़ेपन के गर्त में फेंक देती हैं। साधन होते हुए भी कितने ही लड़के पढ़ नहीं पाते और बेकार के बहाने बनाकर शिक्षा लाभ से वंचित रह जाते हैं। इस दुर्भाग्य से जूझ सकना मनस्वी और दूरदर्शी छात्रों के लिए ही संभव होता है। व्यायामशाला में क्षनिक उत्साह लेकर कितने ही प्रवेश करते हैं किंतु उस कठिन कार्य से खिन्न होकर जल्दी ही छोड़ भी बैठते हैं। नित नये कार्य आरंभ करने वाले और कुछ समय में उसे छोड़ बैठने वाले नर वानरों की बहुत बड़ी मंडली सर्वत्र विचरती देखी जा सकती है। कृषि, व्यवसाय, शिल्प, कला आदि के सभी क्षेत्रों में अथक परिश्रम, प्रचंड साहस, संतुलित विवेक और समुचित धैर्य की आवश्यकता होती है। आलसी, प्रमादी, अधीर और आशंका ग्रस्त मनुष्य सामान्य सांसारिक प्रयोजनों तक में सफल नहीं हो पाते। आंतरिक दुर्बलताएँ अपनी सहेली असफलताओं को निमंत्रण दे-देकर बुला लाती हैं। व्यक्तित्व का परिष्कार न सही, लोक-श्रद्धा और आत्म संतोष देने वाली महानता न सही, स्वार्थ साधन की दृष्टि से संपन्नता और सफलता तो हर किसी को अभीष्ट है ही। उसका आधार भी मनोबल बिना नहीं बनता। जहाँ इसका अभाव होगा, वहाँ न स्वार्थ सधेगा और न परमार्थ।

श्रीराम शर्मा आचार्य जी व्यक्तित्व को संतुलित करने और जीवन को सही ढंग से जीने के लिए उसके कम से कम तीन आयामों को समझने तथा उनका परस्पर संतुलन बनाने पर बल देते हैं। **तीन मुख्य आयाम हैं – 1.काया, 2.विचार तथा 3.चेतना।**

इन तीनों के अपने-अपने विज्ञान हैं –

1.शरीर विज्ञान, 2.विचार विज्ञान या मनोविज्ञान और 3.चेतना विज्ञान अथवा अध्यात्म विज्ञान। इसी को दृष्टिगत रखते हुए **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** ने **सकारात्मक स्वास्थ्य (पॉजिटिव हैल्थ)** की परिभाषा में संशोधन किया। वर्तमान परिभाषा है - **'इट इज फिजिकल, मैंटल, सोशल एण्ड स्पिरिचुअल वैल बीइंग'** अर्थात् शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से स्वस्थ होना। इसलिए जीवन की समग्रता-सफलता के लिए व्यक्तित्व के तीनों आयामों और उनसे संबद्ध विज्ञान की धाराओं को समझना, उपयोग में लाना जरूरी है। **सामान्य रूप से हमारे पास शक्ति की तीन मुख्य धाराएँ हैं –**

भौतिक शक्ति, धन शक्ति तथा विचार शक्ति। इन शक्तियों को यदि भटकने से, गलत रास्ते पर जाने से रोकना हो, तो इन पर चेतना की शक्ति, आध्यात्मिक शक्ति का नियंत्रण होना ही चाहिए। उसके अभाव में भौतिक शक्ति उद्दण्डता की ओर, धन शक्ति, व्यसनों की ओर तथा बौद्धिक शक्ति कुचक्रों- घोटालों की ओर बहक जाती है। इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना को आज खुली आँखों से विभिन्न क्षेत्रों में घटित होते देखा जा सकता है। जिन शक्तियों को मनुष्य ने मनुष्यता की प्रगति, सुख, संतोष, शान्ति, प्रेम, भाईचारे की कामना से विकसित किया था, वही शक्तियाँ ध्वंस, पतन, पीड़ा, असंतोष एवं वर्ग-विग्रह पैदा करने के माध्यम बन गई हैं। जाग्रत् शक्तियों के दुरुपयोग को रोककर उन्हें सदुपयोग के मार्ग पर लाने के लिए आध्यात्मिक ऊर्जा का उपयोग करना जरूरी है। युवा पीढ़ी को शक्ति का सबसे बड़ा भंडार कहा जाय, तो इसे अतिशयोक्ति, बड़बोलापन नहीं कहा जायेगा। इस ऊर्जा भण्डार को सही दिशा में लगाना है, तो उसे आध्यात्मिक धारा से जोड़ना ही पड़ेगा। व्यक्तित्व के आयामों को संतुलित करने के लिए श्रीराम शर्मा आचार्य **जी (4-S Theory) (चार-स के सिद्धांत)** को दिनचर्या में सम्मिलित करने पर बल देते हैं। **वह सिद्धांत है – 1. साधना 2. स्वाध्याय 3. संयम और 4.सेवा**

शारीरिक स्वास्थ्य के लिए शरीर को साधना , मानसिक स्वास्थ्य के लिए मष्तिष्क को स्वाध्याय के माध्यम से अच्छे विचारों से सकारात्मकता देना, संयम के माध्यम से मन को लक्ष्य केंद्रित करके अपना सामाजिक स्तर प्राप्त करना तथा सेवा के माध्यम से आध्यात्मिक स्वास्थ्य की प्राप्ति करना। कहा भी गया है कि परहित सरसि धर्म नहीं। संयम में उन्होंने शरीर संयम, समय संयम, अर्थ संयम, इन्द्रिय संयम, विचार संयम को महत्वपूर्ण बताया है। व्यक्तित्व परिष्कार के लिए जो तपश्चर्या करनी पड़ती है, उसके साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा; चार अंग हैं। यह सभी एक दूसरे के पूरक हैं। इनमें से एक की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। भवन-निर्माण में ईंट, चूना, लकड़ी, लोहा; चारों ही चाहिये। जीवन-निर्वाह में भोजन, शयन, मल विसर्जन और उपार्जन में से एक भी छोड़ने से कठिनाई उत्पन्न होगी। कृषि में बीज, भूमि, खाद और पानी की समान उपयोगिता है। कल्पना लोक के आकाश कुसुम तोड़ने हों तो किसी जादू-चमत्कार के फेर में पड़े रहने से भी काम चल सकता है। यदि यथार्थ अभीष्ट हो तो आत्म-निर्माण के लिए भवन-निर्माण स्तर का, उद्यान खड़ा करने, कारखाना चलाने जैसे सूझ-बूझ भरे प्रबल पुरुषार्थों की आवश्यकता होगी। व्यक्तित्व संतुलन से मानव अपने उच्च स्तर को तो प्राप्त कर ही सकेगा साथ ही वर्तमान में फैली अराजकता, अनैतिकता और अव्यवस्था भी सुधरने में देर नहीं लगेगी। इसलिए श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने कहा था कि "हम बदलेंगे - युग बदलेगा , हम सुधरेंगे - युग सुधरेगा। हम सभी को संकल्प के साथ यह ठानते हुए बस कदम बढ़ाने की देर है।

संकल्पों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।
तभी उठेगा जन जीवन में निर्माणों का ज्वार॥

सन्दर्भ सूची:-

1. शर्मा, पण्डित श्रीराम (1995) चेतन अचेतन एवं सुपर चेतन मन, जनजागरण प्रेस, मथुरा।
2. शर्मा, पण्डित श्रीराम (1995) अपरिमित संभावनाओं का आगार मानवी व्यक्तित्व, जनजागरण प्रेस, मथुरा।
3. शर्मा, पण्डित श्रीराम (2006) मन के हारे हार है मन के जीते जीत, युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा।
4. सत्यरूपानंद, स्वामी (2005) सार्थक जीवन, श्री संत गजानन अभियांत्रिकी महाविद्यालय, शेगांव, महाराष्ट्र।
5. उपाध्याय, श्री वीरेश्वर (2009) जीवन का विकास एकांगी नहीं सर्वांगीण हो, प्रज्ञा अभियान पाक्षिक, ऑफसेट प्रिंटिंग, शांतिकुंज, हरिद्वार।
6. https://aajtak.intoday.in/story/17-years-double-rape-cases-ncrb-statistics-criminal-amendment-act-1-1145715.html
7. http://news.awgp.org/editor
8. http://pragyapakshikabhiyan.com

Dr. Sarita Sharma
Reader in CTE, Ex-Head, Department of Education, Ex-Dean Edu. IASE Deemed University, Sardarshahar, Churu (Rajasthan)

Raveesh Kumar
Research Scholar , (Ph.D. Education) IASE Deemed University, Sardarshahar, Churu (Raj.)